International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN-2250-253X, (Print), E-ISSN-2320-544X, ISSUE-11, VOL-I, Nov,2013

शोध पत्र- हिन्दी

fgUnh miU;kl e ie vkj ;ku Hkkouk

¼Hkxorhpj.k oek] ;'kiky] vK; vkj jktdey pk/kjh d InHk e½

* Mk- eukt dekj

* ik/;kid jktdh; ofj"B ek/;efed fo|ky;] ukgM jokMh

y[klkj %& *प्रेम और यौन भावना विषय पर साहित्य की सभी विधाओं में लिखा गया है। हिंदी उपन्यास भी इससे अछूता नहीं है। हिंदी उपन्यासों में अन्य विषयों की भांति प्रेम और यौन विषयों पर उपन्यासकारों की कालजयी रचनाएं उनकी भाव स्थूलीय गरिमा और असुलभ भंगिमा के कारण सभी वर्ग के पाठकों को आह्लादित करती हैं। इस विषय पर लिखे गए उपन्यासों में काम को जीवन का सहज सत्य मानकर यौन आकर्षण को मनुष्य की सबसे सहज, स्वाभाविक एवं तीव्र अनुभूति के रूप में चित्रित किया जाता है। यहां भगवतीचरण वर्मा, यश्पाल, अज्ञेय और राजकमल चौधरी के इस दृष्टि से महत्वपूर्ण उपन्यासों की विवेचना की गई है।*

'kk/k 'kCn %&

leyfxdrk] f=dk.kh;] {k.kokn] mPNa[kyrkA

उपन्यास समाज की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। इसके अंतर्गत वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्रों और उनकी समस्याओं का चित्रण आता है। हिंदी उपन्यासों में अन्य विषयों की भांति प्रेम और यौन विषयों पर उपन्यासकारों की कालजयी रचनाएं उनकी भाव स्थूलीय गरिमा और असुलभ भंगिमा के कारण सभी वर्गों के पाठकों को आह्लादित करती हैं। हिंदी उपन्यासों में चित्रित प्रेम और यौन भावना युगानुरूप बदलती रहती है। इनके कथ्य जीवन के अधिक निकट जान पड़ते हैं और यथार्थ का पुट लिए हैं। इनमें त्याज्य समझे जाने वाले विषयों पर सपाट ब्यानबाजी मिलती है। इनकी विषय–वस्तु होमोसेक्स, प्रेम–विचार, रोमांस, विवोहत्तर संबंध, त्रिकोणीय प्रेम, यौनतृप्ति, विवाह, वेश्यागमन आदि है जो आधुनिक समाज का अंग बन गए हैं। इस विषय पर लिखे गए उपन्यासों में काम को जीवन का सहज सत्य मानकर यौन आकर्षण को मनुष्य की सबसे सहज, स्वाभाविक एवं तीव्र अनुभूति के रूप में चित्रित किया जाता है। हिंदी उपन्यासों में प्रेम और यौन का चित्रण करने वाले उपन्यासकारों की सूची लंबी हैं। भगवतीचरण वर्मा, यशपाल, अज्ञेय और राजकमल चौधरी के इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण उपन्यासों की विवेचना की गई है।

भगवतीचरण वर्मा ने अपने उपन्यासों में नारी स्वतंत्रता की प्राथमिकता से सिफारिश की है चाहे वह 'प्रेम और यौन' विषयों पर ही क्यों न हो। उनके उपन्यास 'तीन वर्ष' में प्रेम, विवाह और यौन का भिन्न रूप में चित्रण मिलता है। उपन्यास की नायिका प्रभा के लिए विवाह का आधार प्रेम नहीं है। वह विवाह को केवल आर्थिक दृष्टिकोण से देखती है – ''मैं तो विवाह को वह संस्था मानती हूँ जिसके द्वारा पुरुष स्त्री के भरण–पोषण तथा उसकी रक्षा का भार अपने ऊपर लेता है। रहा कामवासना का प्रश्न वह बाद में उठता है।'' 1 रमेश की निर्धनता के प्रकाश में प्रभा को उसका प्रेम हेय लेता है लेकिन जब वह धनी हो जाता है तो वह उससे विवाह करना चाहती है। रमेश उसे वेश्या की उपमा देता हुआ त्याग देता है। उपन्यास में प्रभा और सरोज नामक वेश्या का चारित्रिक विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि सरोज ह्रदय से वेश्या नहीं है परंतु प्रभा संभ्रात परिवार से होने पर भी पैसे के लिए वेश्या के लक्षणों पर अग्रसर है।

वर्मा जी के उपन्यास 'रेखा' में अतृप्त यौन भावनाओं को प्रमुखता से दिखाया गया है। इस उपन्यास में प्रेम और यौन भाव का अस्तित्व अलग–अलग दिखाने का प्रयास किया गया है। उपन्यास की नायिका रेखा स्वच्छंद प्रकृति की है। वह क्षणवाद में जीने की पक्षधर है। वह एम0 ए0 में पढ़ते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र के तरेपन वर्षीय विधुर प्रोफेसर प्रभाशंकर से विवाह कर लेती है। वह कहती है – ''पता नहीं मैं आपसे प्रेम करती हूँ या नहीं लेकिन इतना निश्चित है कि मैं आपका प्रेम पाने को उत्सुक हूँ।'' 2 उसका यह वक्तव्य केवल उसका किशोर अवस्था में विपरीत लिंग में केवल आकर्षण दिखाता है; प्रेम नहीं। विवाह के बाद उसे अपनी गलती का अहसास होता है। उसकी वासना की प्यास अधेड़ प्रोफेसर से नहीं बुझ पाती थी। वह समझ गई थी कि इस संबंधा से उसे जीवन भर यौन अतृप्ति रहेगी। प्रोफेसर को भी इसका अहसास है – ''तुमसे विवाह करके मैंने तुम्हारे प्रति बड़ा अन्याय किया है। अपने शरीर की भूख तो मैं जानता था, परंतु तुम्हारे शरीर की भी कोई भूख हो सकती है, यह मैं भूल गया था।''3 रेखा को अब अहसास होने लगा कि स्त्री–पुरुष का मूल संबंधा यौन संबंध है और शरीर का धर्म केवल उसकी वासना तृप्ति में है। रेखा का प्रेम और यौन विषय पर दृष्टिकोण भिन्न हो

जाता है। वह प्रेम और शरीर की वासना को दो अलग–अलग पहलू समझती है। इसी धारणा के चलते वह सोमेश्वर, रामशंकर, निरंजन कपूर, शशिकांत, शिवेन्द्र, यशवंत, योगेन्द्र आदि कई पुरूषों से यौन संबंध बनाती है। वर्मा जी रेखा के चरित्र के माध्यम से स्त्री–पुरुष के स्वच्छंद यौन संबंध के पक्षधर लगते हैं। रेखा के चरित्र से लगता है कि वह शारीरिक तृप्ति के लिए पुरुषों को चाहती है पर हृदय का वास्तविक प्रेमाकर्षण प्रोफेसर प्रभाशंकर में ही है। उसकी इसी भावना के कारण उसका चरित्र मिटकर भी अमिट जान पड़ता है।

यशपाल ने अपने उपन्यासों में नर–नारी को समान महत्त्व देते हुए कई स्त्री–पुरुष पात्रों की प्रेम और यौन भावनाओं को अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। इस दृष्टि से उनके प्रमुख विवेच्य उपन्यास 'क्यों फँसे', 'दिव्या', 'अमिता', 'दादा कामरेड' और 'तेरी मेरी उसकी बात' है।

'क्यों फँसे' में नायक भास्कर पत्रकार की भेंट मोती से चित्र प्रदर्शनी में होती है। वह उससे प्रेम करने लगता है। मोती विवाहिता है। विवाहिता होकर भी वह भास्कर के साथ स्वच्छंदता से घूमती–फिरती और रंगरलियां मनाती है। भास्कर ने प्रथम यौन संबंध अपनी यौन पिपासु मामी से बनाया। उसके बाद एक महिला चिकित्सक उसके संसर्ग में आई। भास्कर की मामी और मोती को अपने पतियों से यौन–तृप्ति नहीं मिलती थी। इस उपन्यास में विवाहेत्तर यौन संबंधों का उन्मुक्त चित्रण दिखाया गया है। इसमें सामाजिक मर्यादा एवं नैतिकता को धता बताकर व्यक्तिगत यौन–पिपासा महत्त्वपूर्ण बताई गई है। भास्कर का संपर्क हेना से भी होता है। भास्कर सोचता है क्या स्त्रियों की शारीरिक यौन पिपासा नहीं होती जिन्हें वे पूरा करने की इच्छा रखती हों। भास्कर मोती के विषय में सोचता है – ''पति जैसा शरीर से छोटा है वैसा ही ..... बेचारी के परिवार द्वारा बेटी के लिए समय पर मर्द देने की व्यवस्था का परिणाम। ऐसे मर्द से क्या संतोष पाती होगी ?[4]

''दादा कामरेड'' की शैल बाला उच्छृंखल भाव रखती है। वह अपने जिप्सी मन को कभी महेन्द्र पर, कभी खन्ना पर तो कभी रॉबर्ट पर टिकाती है। वह अपनी सहेली के भाई महेन्द्र से यौन संबंध बना लेती है। खन्ना उससे विवाह करना चाहता है, परंतु शैलबाला जब उसे बताती है कि महेन्द्र को वह अपना शरीर दे चुकी है तो वह पीछे हट जाता है। तब उसे पता चलता है कि पुरुष मन की अपवित्रता क्षमा कर सकता है पर शरीर की नहीं। यहां पुरुष के स्त्री पर एकाधिकार चाहने की संकुचित प्रवृति भी लक्षित होती है। कामरेड हरीश से मिलने पर उसके प्रेम में उच्छृंखलता के स्थान पर गंभीरता दिखाई देती है। वह उससे विवाह करना चाहती है। वह हरीश से प्रेम संबंध बनाने से वह गर्भवती हो जाती है। तितली की तरह पुरुष रूपी फूलों पर विचरने वाली शैलबाला हरीश कमारेड की फाँसी की सजा सुनकर उदात व निष्काम प्रेम की मूर्त बन जाती है और हरीश के बच्चे को अविवाहित रहकर ही जन्म देने का निश्चय करती है। अब उसकी कामुक प्रवृति लुप्त हो जाती है और प्यार हावी हो जाता है। उसे अपने प्रेम या यौन संबंधों पर कोई पश्चाताप नहीं है – ''मैं अपने किसी भी काम के लिए अपनी बुद्धि के सामने लज्जित नहीं हूँ।''[5] जब वह हरीश के समक्ष उसके उसके कहने पर नंगी हो जाती है तो उसका चरित्र छिछौरा लगता है परंतु यह उसका प्रेम हेतु समर्पण भाव दिखाता है– ''शैल को शरीर से कपड़े उतारना अपनी त्वचा उतारने के समान कठिन जान पड़ा पर हरीश के निराशा से सिर लटका लेने की बात सोचकर वह स्वंय उपने ऊपर जबरदस्ती करने को विवश हो गई।''[6]

'अमिता' एक ऐतिहासिक उपन्यास है। यह सम्राट अशोक के कलिंग विजय के बाद हृदय परिवर्तन की घटनाको लेकर आगे बढ़ता है। इसमें हिता और मोद नामक दास–दासी का प्रेम व्यापार दिखाया गया है। गुप्तकाल में नारी मात्र भोग्या या संपत्ति की वस्तु दिखाई देती है। हिता की माँ उसके प्रेम संबंधों पर उसे समझाती है–''तू यह क्या रोग पाल रही है . .... तू राजकुल की दासी है.....दासी को जो क्रय कर ले, उसी की सेवा दासी का धर्म है। तेरा तन–मन सेवा के लिए है, प्रेम के लिए नहीं है।''[7]

'दिव्या' बौद्धकालीन ऐतिहासिहक उपन्यास है। इसमें प्रेम और यौन का अत्यधिक चित्रण है। इसका नायक पृथुसेन दास होने के साथ सर्वश्रेष्ठ तलवारबाज है। दिव्या ब्राहमण कुल से है और नृत्य निपुण है। वह कुलीन भेद को त्यागकर पृथुसेन से प्रेम करती है और तन–मन उसे दे देती है। वह अपने पिता को अपने प्रेमी से विवाह करने की बात दृढ़ता से कहती है।

प्रेस्थ के अनुसार स्त्री भोग्या मात्र है –'स्त्री जीवन की पूर्ति नहीं, जीवन पूर्ति का साधन मात्र है। सामर्थ्यवान पु#ष अनेक स्त्रियां प्राप्त कर सकता है। यशपाल ने यौन चित्रण करते हुए साहित्यिक शब्दों से अश्लीलता नहीं छलकने दी है – ''उसके अवश हाथ दिव्या के उरोजो के नीचे स्पंदित प्राणों की खोज में उस के कंचुक पर चंचल हो उठे।'' 9 दिव्या विवाहपूर्व ही पृथुसेन के संसर्ग से गर्भवती हो जाती है और अपने बच्चे को जन्म देना चाहती है। वह अपने इस कार्य को पाप नहीं मानती। उसका यह प्रेम दृष्टिकोण आधुनिक लगता है।

'तेरी मेरी उसकी बात' की ऊषा सामाजिक मर्यादाओं एवं माता पिता त्यागकर डॉ0 अमरनाथ से अंतर्जातीय विवाह कर लेती है। नरेन्द्र अमरनाथ का बचपन का दोस्त है। ऊषा खुले विचारों की महिला है। अमरनाथ को उसका नरेन्द्र के साथ खुलापन रास नहीं आता। उसे उनके संबंधों पर संदेह

होने लगता है। इससे उसका दाम्पत्य जीवन क्षीण होने लगता है। अमरनाथ के जेल जाने पर नरेन्द्र ऊषा को सहानुभूति देता है और उसकी मदद करता है। जेल से आने पर लोगों द्वारा ऊषा–नरेन्द्र के संबंध पर उड़ायी बातों से अमरनाथ का लगता है कि ऊषा नरेन्द्र की रूचि–अरूचि, भावनाओं का उसने कहीं अधिक ख्याल रखती है। वह अपने वैवाहिक संबंधों से कुंठित हो उठता है। पत्नी से एकनिष्ठ प्रेम चाहने वाला उसका पु#षत्व ईर्ष्या की आग में जल उठता है। वह ऊषा से दोनों में से एक का चुनाव करने को कहता है। उसके बार–बार यही आग्रह करने पर ऊषा दृढ़ होकर कहती है– ''अब फिर चुनना है तो. .....इज नॉट यू।''[10] इस त्रिकोणीय प्रेम के कारण उनका दाम्पत्य जीवन टूट जाता है। यहां प्रेम संबंधों में स्वतंत्रता का अभाव दिखाया गया है। ऊषा घर छोड देती है और उसी दिन दुर्घटना में अमरनाथ की मृत्यु हो जाती है। ऊषा अपने बेटे के साथ शेष जीवन बिताती है।

अज्ञेय के चरित्र प्रधान उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' और 'नदी के द्वीप' में भी प्रेम और यौन चित्रण मिलता है। इस उपन्यास का नायक शेखर और नायिका शशि है। शशि शेखर से प्रेम करती है पर सामाजिक आदर्शों के कारण उससे विवाह नहीं कर सकती क्योंकि वह लंबे रिश्ते में उसका भाई लगता है। शशि का अनमेल विवाह रामेश्वर से हो जाता है। वह शशि और शेखर के संबंधों पर शक करता है और शशि पर अत्याचार करता है। रामेश्वर द्वारा पेट पर चोट करने से शशि अपने ऊपर किए गए अत्याचार के विषय में कहती है – ''नारी केवल पु#ष के उपभोग का साधन रह गई है, निरी सामग्री जिसे जब चाहें, जहां चाहे अपनी तुष्टि की आग में होम कर दें।''[11] इस उपन्यास में वेश्या जीवन का चित्रण भी मिलता है–''यह है वेश्याओं का मुहल्ला, यहां शरीर बिकता है। जहां बंधन नहीं, लज्जा नहीं है, रोशनी नहीं है, अंधकार नहीं है – है रंग.....रंगे हुए मुँह. ..... ।''[12] इस उपन्यास में शशि और शेखर के प्रेम का दूर के भाई–बहन रिश्ते के कारण सामाजिक मर्यादा में इतना जकड़ा दिखाया है जो अव्यक्त ही रहा; जहां आज के परिवेश में सगौत्र, एक ही गांव, करीबी संबंधियों (चचरे, ममेरे, फुफरे भाई–बहन) में प्रेम व विवाह के विवादित उदाहरण आए दिन देखने को मिलते हैं।

'नदी के द्वीप' उपन्यास में रेखा नायिका है जिसका विवाह हेमेन्द्र से हुआ है। विवाह के दो वर्ष बाद उसका अलगाव हो जाता है क्योंकि उसके पति हेमेन्द्र का अपने एक मित्र के साथ समलैंगिक संबंध था। काम–तृप्ति की चाह में भटकती हुई रेखा की भेंट डॉ0 भुवन से होती है। भुवन रिसर्च वैज्ञानिक है। वह उससे प्रेम करने लग जाती है। भुवन के यौन संबंध ा से वह गर्भवती हो जाती है। उपन्यास में रेखा के चरित्र के दो विरोधी पहलू सामने आते हैं। वह समर्पण भाव से भुवन से प्रेम करती है पर व्यक्तिवादी और स्वच्छंदतावादी प्रकृति के कारण उससे बंध कर भी नहीं रहना चाहती। भुवन जब उससे विवाह का आग्रह करता है तो वह उसका प्रस्ताव ठुकरा देती है। वह कहती है – '' मैंने तुमसे प्यार मांगा था; तुम्हारा भविष्य नहीं मांगा था; न मैं वह लूंगी।''[13] वह दवा से अपना गर्भ भी समाप्त कर देती है। अंत में वह डॉ0 रमेशचन्द्र से विवाह कर लेती है पर उसके हृदय में भुवन के लिए प्यार जीवित रहता है। रमेश के साथ भी वह मनवांछित भविष्य पाने में असमर्थ रहती है। राजकमल चौधरी के उपन्यास 'मछली मरी हुई' में प्रेम और यौन का उन्मुक्त चित्रण है। इसमें 'होमोसेक्स' (समलैंगिक संबंध) दिखाया गया है। कल्याणी डॉक्टरी पढ़ने अमेरिका जाती है। धनाभाव के कारण उसे पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ जाती है। वह वापस भारत न आकर वहीं जीविका हेतू जिस्म फरोशी करने लग जाती है। उसकी भेंट निर्मल से होती है। दोनों एक–दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। एक दिन कल्याणी को संसर्ग के लिए तैयार करके स्वंय निर्मल ठंडा पड़ जाता है। तो कल्याणी काम–पीड़ा के आवेश में उसका अपमान करके भगा देती है। कुछ समय बाद वह बुरी तरह बीमार हो जाती है। डॉक्टर रघुवंश उस समय अमेरिका में थे, उन्होंने उनका ईलाज किया। स्वस्थ होने पर उन्होंने कल्याणी से विवाह कर लिया।

उसकी बेटी प्रिया ने जन्म लिया और कुछ वर्ष बाद कल्याणी मर गई। कल्याणी रघुवंश के साथ विश्वासघात नहीं करती वह अपने पिछले जीवन की सच्चाई उसे बता देती है। निर्मल एक बड़े पूँजीपति के रूप में उभरता है। वह कल्याणी का ढूंढता है तो पाता है कि वह मर चुकी है। वह कल्याणी की स्मृति में 'कल्याणी मेन्शन 30 मंजिला 'स्काई स्क्रैपर' बनाता है। वह शीरी से विवाह कर लेता है। शीरी 'होमोसेक्सुअल' है। शीरी के विषय के विषय में लेखक ने लिखा है – '' दोनों बहनें रात में बिस्तर पर इक्ट्ठी सोती थी.....शीरी भीग जाती थी फिर भी वह बड़ी बहन की नंगी देह से लिपटी रहती थी.....शीरी की उंगलियां भीग जाती थी। बड़ी बहन खुशी से चीखती थी और शीरी के स्तनों पर..... ।''[14] निर्मल भी यौन मामले में बीमार है पर वह नपुंसक नहीं। उसे अच्छे डॉक्टर की आवश्यकता है। वह शीरी को तड़पाकर छोड़ देता है। शीरी मछली की तरह तड़पती है। उसे ही मरी हुई मछली का प्रतीक दिखाया है। प्रिया और शीरी में मित्रता बढ़ी जिससे प्रिया भी 'होमोसेक्सुअल' हो गई। रघुवंश कल्याणी और निर्मल के प्रेम के विषय में जानता था। वह चाहता था कि निर्मल कल्याणी के अपमान से अपनी मर्दानगी का जो विश्वास खो चुका है उसे प्राप्त करके सामान्य हो जाए। एक दिन प्रिया ने जब शीरी को यौन को मौन पिपासा से तड़पते देखा तो वह निर्मल से पूछ बैठी कि यदि वह यौन

क्रिया करने में सक्षम नहीं है तो शीरी को क्यों तड़पाता है। निर्मल को लगा कि गुस्से में प्रिया के रूप में कल्याणी उसका पुनः अपमान कर रही है।

उसका पौ#ष जाग उठा उसने प्रिया से कई बार बलात्कार कर डाला। रघुवंश कहता है – ''शिकार बनकर प्रिया ने वह काम कर दिया, जो कल्याणी करना चाहती थी। तुम जो कमजोरी महसूस कर रहे थे, वह दूर हो गई....इसी तरह का राक्षसी व्यवहार उसे फिर से साधारण स्त्री बना सकता था।''[15] निर्मल ने 'कल्याणी मेन्शन' प्रिया के नाम करा दिया। अब उसे शीरी का दर्द मालूम हुआ। वह वैवाहिक जीवन की शुरूआत करने शीरी के पास गया। उसे लगा मरी हुई मछली के शरीर से निकलकर शीरी नामक स्त्री प्रकट हो रही है।

सार रूप में कहा जा सकता है कि समय चाहे आधुनिक हो या प्राचीन मनुष्य का 'प्रेम और यौन भावना' संबंधी दृष्टिकोण लगभग समान रहता है। मानव का स्वभाव काल या स्थान परिवर्तन के साथ नहीं बदलता। अतः विवेच्य उपन्यासों में लक्षित 'प्रेम और यौन भावना' की विवेचना आधुनिक जीवन के निकट और आधुनिक मानव के लिए प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ

1. भगवतीचरण वर्मा; तीन वर्ष; पृ0 130
2. भगवतीचरण वर्मा; रेखा; पृ0 69
3. वही; पृ0 346
4. यशपाल; क्यों फंसे; पृ0 59
5. यशपाल; दादा कामरेड; पृ0 89
6. वही; पृ0 118
7. यशपाल; अमिता; पृ0 54
8. यशपाल; दिव्या; पृ0 87
9. वही; पृ0 51
10. यशपाल; तेरी मेरी उसकी बात; पृ0 416
11. अज्ञेय; शेखर एक जीवनी भाग–2; पृ0 208
12. वही; पृ0 22–23
13. अज्ञेय; नदी के द्वीप; पृ0 214
14. राजकमल चौधरी; मछली मरी हुई; पृ0 122
15. वही; पृ0 154